डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना, मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–15 मई, 2020)

नयी कविता और अज्ञेय

ऐतिहासिक दृष्टि से 'नयी कविता' भारत की आजादी के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये षिल्प विधान का अन्वेषण किया गया। वैसे तो नयी कविता के आरंभ को लेकर विद्वानों में मतभेद है, लेकिन आमतौर पर 'दूसरा सप्तक' के प्रकाषन वर्ष 1951 ई0 से नयी कविता का प्रारंभ माना जाता है। दूसरा सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को नयी कविता कहा है। नयी कविता मूलतः प्रयोगवाद का विकास है। अज्ञेय नयी कविता आंदोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। 'तीसरा सप्तक' (1959 ई0) का प्रकाषन वर्ष नयी कविता के विकास का उत्कर्ष काल है। नयी कविता के कवियों में आमतौर पर दूसरा और तीसरा सप्तक में संकलित कवियों को माना जाता है। दूसरा सप्तक के कवि हैं– रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेष मेहता, षमषेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, षकुंतला माथुर और हरि नारायण व्यास मुख्य हैं। 'तीसरा सप्तक' के कवियों में कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण षाही, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना और मदन वात्स्यायन हैं। अन्य कवियों में मुख्य हैं– श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेन्द्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अषोक वाजपेयी, चन्द्रकान्त देवताले आदि।

अज्ञेय प्रयोगवाद और नयी कविता के जन्मदाता कवि हैं। इनकी लेखनी विविध विधाओं उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, पत्र–पत्रिकाओं के संपादन में भी चली है। उनकी आरंभिक कविताएं 'भग्नदूत' (1929–33) छायावादी पैटर्न पर होते हुए भी अपनी संपूर्णता में एक अलग पहचान बनाती है। 1933 से 1946 तक 'इत्यलम' की कविताएं प्रेम की विकलता, बौद्धिकता का रंग और आत्मव्यंग्य के ढ़ंग पर है। 'तार सप्तक' का संपादन कर उन्होंने एक ऐतिहासिक काम किया। 'तार सप्तक' (1943 ई0) के प्रकाषन से कविता का पैटर्न पूरी तरह बदले हुए तेवर में दिखने लगा। इसमें पहली बार परंपरा और इतिहास से मुठभेड़ मिलता है। उन्होंने एक नये अनुभव के साथ नयी आधुनिक कविता की परंपरा को जन्म दिया और सर्वथा एक नये इतिहास का सृजन किया।

1949 ई0 में 'हरी घास पर क्षणभर' नामक कविता संग्रह प्रकाषित हुआ। इस संग्रह की कविताओं में रोमांटिक और आधुनिक स्वभाव का द्वन्द्व है। इसमें अनुभूति और संवेदना की गहराई प्रकट होती है। इस संग्रह की कविताओं की खास बात यह है कि इसमें नयी कविता आंदोलन की जड़ें मौजूद है और प्रयोगवादी कविता से इतर नयी कविता की परिपक्वता दिखलायी पड़ती है। तीसरा सप्तक (1959 ई0) नयी कविता का प्रतिनिधि संग्रह माना जाता है। नयी कविता में नयेपन की पहचान कविता में आधुनिकता, प्रयोगषीलता, नयी काव्य भाषा, वस्तु और रूप की नवीनता से होती है। 'कलगी बाजरे की' कविता अज्ञेय के समग्र आधुनिक दृष्टिकोण, प्रयोगषीलता, नया विषयवस्तु, नये कथ्य, नयी भाषा, नये रूप और नये रंग–ढ़ंग को प्रदर्षित करती है। अज्ञेय इस कविता के माध्यम से बतलाते हैं कि कविता कैसी होनी चाहिए ? उनका विरोध कहां और क्यों है ? वैयक्तिकता तथा सामाजिकता के द्वन्द्व के संबंधों

का सरोकार कहां और क्यों है ? आधुनिकता के ट्रेन्ड में व्यक्ति पहले स्तर पर महत्त्वपूर्ण है और समाज दूसरे स्तर पर। आजादी के बाद की प्रौद्योगिकी और पूँजीवादी प्रवृत्तियों और अमेरिकी वर्चस्ववाद के दबाव में साम्यवाद और वामपंथ की कमर टूट चुकी थी और वह साहित्य की मुख्यधारा से अलग हो चुका था और अब उसकी अभिव्यक्ति का कोई औचित्य नहीं था। साम्यवाद और सामाजिकता के दबाव में व्यक्ति, उसका व्यक्तित्व, वजूद और आइडेन्टिटी खतरे में पड़ गया था। अस्तित्ववादी दर्षन, मनोविष्लेषण और डार्विन के विकासवादी दर्षन का डंका बज रहा था। ऐसे में अज्ञेय ने व्यक्ति को सामाजिक जकड़न से निकालकर उसके व्यक्तित्व, अस्तित्व और समाज में उसकी अस्मिता की पहचान करायी। क्या यह युगधर्म नहीं है ?

अज्ञेय इतिहास विधायक रचनाकार हैं। इतिहास निर्माता रचनाकार की अपनी एक अलग दृष्टि और पहचान होती है। साहित्य के सामाजिक संबंधों में आये बदलाव की पहचान आवष्यक थी। अज्ञेय बड़ी गंभीरता से द्वितीय विष्वयुद्ध के त्रासद परिणाम तथा उपनिवेषवादी, साम्राज्यवादी और पूँजीवादी वर्चस्व और उसकी अहंवादी बर्बरता और आतंक को महसूस कर रहे थे। इस समय वामपंथि रूझान और पार्टीबद्ध लेखन की जरूरत नहीं थी, बल्कि व्यक्ति को आत्मबोध, व्यक्तित्व, अस्तित्व, व्यक्ति स्वातंत्र्य और आइडेन्टिटी की जरूरत थी, अज्ञेय ने उसकी खोज की और अपनी रचना में उसे पर्याप्त स्थान दिया। इसके कारण उन्हें व्यक्तिवादी और अहंवादी कहा गया।

अज्ञेय का आत्मबोध 'व्यक्ति सत्य' और 'व्यापक सत्य' के बीच एक नया एवं अद्‌भुत संबंध बनाता है। आत्मबोध नहीं होगा तो 'जगबोध' संभव नहीं है। भक्तिकाल में कबीर ने आत्मबोध किया था और आधुनिक काल में निराला और अज्ञेय ने। सत्य, षिव और सुन्दर की पहचान आत्मबोध से ही संभव है। अज्ञेय को जीवन, संघर्ष, प्रेम–सौंदर्य और मृत्यु से घनघोर रूप में लगाव था। जीवन को देखने का अपना पैरामीटर है। अज्ञेय कहते हैं, 'जीवन को सीधे देखो काँच से नहीं। काँच से देखने पर रूपों की दुनिया का आभास होगा। जीवन तक पहुंच नहीं पाओगे।' इस भटकने के खतरे से बचने के लिए जीवन को सीधा और सार्थक रूप में देखना जरूरी है। अज्ञेय की 'सोन मछली' कविता इस अर्थ को नये अर्थ–बिंब–संकेतों से सत्य षिव सुंदर को स्थापित करती है–

हम निहारते रूप :
काँच के पीछे हांप रही है मछली।
रूप–तृषा भी
(और काँच के पीछे)
है जिजीविषा।

हिन्दी के महान आलोचक डॉ. नामवर सिह को यह कविता बेहद पसंद थी। क्योंकि इस छोटी सी कविता में रूप है, सौंदर्य है, जीवन है, जीवन जीने की तलफन है, व्यापक संघर्ष की निरन्तरता है, गुलामी का अहसास भी और गुलामी से मुक्ति का प्रयास भी है। बावजूद इसके कई आलोचकों ने अज्ञेय को रूपवादी और फासीवादी होने का आरोप लगाया। जबकि लूकाच ने कविता में रूपहीनता की निंदा करते हुए कहा,'रूप कथ्य विरहित कैसे होगा?' मतलब जीने की इच्छा है तो रूप और सौंदर्य की प्यास होगी ही। क्लाउमैन जैसे आलोचक ने जर्मनी के सुप्रसिद्ध कवि गाडफिडबेन को रूप के कारण फासीवादियों की श्रेणी में रखा था। अज्ञेय के साथ यही काम कुछ मार्क्सवादी आलोचकों ने किया। जबकि अज्ञेय ने देषविभाजन की त्रासदी तक के रूप को अनेक कविताओं में चित्रित किया है।

दिनांक : 14 / 05 / 2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**